रात्रि क्लास 2/11/68 ओमशांति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? बच्चे क्या अनुभव सुनाते हैं। जानते हैं बेहद के बाप को जानने से सभी कुछ मिल जाता है। कोई चीज़ मांगने की नहीं होती है। निश्चय बुद्धि विजयन्ती। विश्व पर विजय भी पहने और विजय माला का दाना भी बनते हैं। विश्व पर विजय तुम्हारी थी। तुम भारत पर राज्य करते थे। अभी ऐसे तो नहीं कहेंगे। नर्क पर राज्य करते हैं। नर्क में गोते खाते हैं। स्वर्ग में राज्य करते थे। विष्णु अर्थात् ल॰ना॰ सागर में दिखाते हैं ना। विष्णु है ल॰ना॰ का जोड़ा रूप। ऐसा चार भुजा वाला देवता कोई होता नहीं है। चतुर्भुज डांस भी करते हैं। अभी तुम जानते हो विश्व पर राज्य स्थापन हो रही है। हम ब्राह्मण ही अपने लिए श्रीमत पर स्थापन करते हैं। वह सिपाही लोग राजा के लिए लड़ते हैं। तुम अपनी राजधानी अपने लिए ही स्थापन करते हो। तुम कहेंगे हमारी राजधानी है। स्वर्ग के हम मालिक हैं। ऐसे कहेंगे यह खेल है स्वर्ग के मालिक, फिर नर्क में आना। नर्क का मालिक कहना शोभता नहीं है। नर्क के निवासी हैं ज़रूर। भारत इस समय नर्क है। कलियुग है। पुरानी दुनिया में पुराना भारत में पुरानी दिल्ली। जब नई दिल्ली थी तो परिस्तान कहा जाता था। दुनिया नई और पुरानी होती है। तुम समझते हो बाबा आया हुआ है श्रीमत दे रहे हैं नई दुनिया के लिए। फिर यह पुरानी दुनिया न रहेगी। यह ल॰ना॰ नई दुनिया के मालिक हैं। बाबा ने समझाया है 84 जन्मों बाद अभी कलियुग में यह अभी अन्तिम जन्म है। बेगर हैं। भारत बरोबर सोने की, हीरे की थी। अभी लोहे की कहेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान कैसे बनना होता है, यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। तुमको श्रीमत मिली हुई है। श्रीमत से ही श्रेष्ठ, आसुरी मत से भ्रष्ट। अभी तुम समझते हो, फिर यह सभी बातें बिल्कुल ही भूल जावेंगे। इतना भूलते हो जो बाप, टीचर, गुरु तीनों को ही भूल जाते हो। बाप ने समझाया है मैं टीचर भी हूँ, सर्व की सद्गति दाता भी हूँ। स्वर्ग में एक ही धर्म होता है। स्वर्ग को सद्गति, शांतिधाम को गति कहा जाता है। तो अभी जबकि तुमको इतनी राजधानी मिलती है, बाप कहते हैं मुझ बाप की श्रीमत पर नहीं चलेंगे? आसुरी मत पर चलकर कितनी अपनी बुरी गति की है। अपरंअपार दुःख पाये हैं। समझते भी हैं श्रीमत पर चल पवित्र बनना चाहिए; परंतु परवश अर्थात् रावण के वश हो जाते हैं। बाप कहते हैं तुमको ऐसा गुणवान बनना है।

इस समय बाबा को तुम कहते हो पिताश्री; क्योंकि श्रेष्ठ और श्रेष्ठ बनाने वाला है। इस दुनिया में तो सभी मनुष्य मात्र दुखी ही दुखी हैं। कोई दिवाला मारते हैं। अभी बाप मिला तो यहाँ का अपना हिसाब-किताब समेट लेना चाहिए। यह पुरानी चीज़ है ना। सभी से बुद्धि का योग तोड़ एक से जोड़ना पड़ता है। कहते हैं बाबा आप आवेंगे तो हम आपका ही बनेंगे। बाप स्वर्ग की रचना रचते हैं, तो ज़रूर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। टीचर से जब तक पढ़ते हो तो टीचर से बुद्धि योग लगानी चाहिए, पढ़ना भी चाहिए। सिर्फ समझना है 84 का चक्र कैसे फिरता है। बाप चैतन्य बीज रूप है। उनको सारे झाड़ का ज्ञान है। जड़ झाड़ को भी तुम चैतन्य ही जानते हो ना। यह भी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। यह बाप ही आकर बताते हैं। बड़ के झाड़ का मिसाल है ना। कितनी शाखाएँ निकलती हैं! सैकड़ों। बहुत लोग जाते हैं। फाउंडेशन है नहीं। देवी-देवता धर्म का भी ऐसे है। फाउंडेशन है नहीं। बाकी सभी खड़े हैं। भारत अविनाशी खंड है। तुम राज्य करते थे। अभी तुम पतित हो। इनको स्वर्ग में नहीं कहेंगे। बच्चों को समझ मिल रही है। बाप कहते हैं पवित्र रहने लिए प्रतिज्ञा करनी है, हम दोनों ही पवित्र रहेंगे। बेहद का बाप फरमाते हैं तो उनसे पूरा वचन देना चाहिए। तुम बच्चों का ही कल्याण होगा। यह है रूहानी पढ़ाई। रूहानी बाप बैठ पढ़ाते हैं। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। भगवानुवाच कहते हैं–हे बच्चो! हम रूहों को पढ़ाने आये हैं। अपन को आत्मा समझो। ऊँच ते ऊँच बाप पढ़ा रहे हैं। क्या? स्वर्ग की राजाई पद। प्राचीन भारत का राजयोग सिवाय बाप के कोई सिखाये नहीं सकता है। यह तुम बच्चों को सभी को सुनाना है। बाप कहते हैं मैं आया हूँ रावण राज्य से लिबरेट करने। अभी मेरे से

योग लगाओ तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। तुम अपनी राजधानी पा लेंगे। स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। यह रूहानी पिता (स्प्रीचुअल फादर) स्प्रीचुअल बच्चों को कहते हैं मैं बेहद का बाप हूँ। कलकत्ते में कॉनफ्रेंस हुई थी; परंतु पूरा समझा न सके। स्प्रीचुअल नॉलेज स्प्रीचुअल फादर ही दे सकते हैं। वही रूहों को नॉलेज देते हैं। मनुष्य मनुष्य को स्प्रीचुअल नॉले(ज) दे नहीं सकता। देवताएँ भी नहीं दे सकते। सिर्फ स्प्रीचुअल फादर ही स्प्रीचुअल बच्चों को नॉलेज देते हैं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। यह है भारत का प्राचीन ईश्वरीय योग। यह रूहानी बाप है। जिस्मानी कोई भी मनुष्य यह नॉलेज दे नहीं सकता। विलायत से तुम्हारा नाम निकले तो यहाँ भी तुम्हारा बहुत नाम हो जाये। महऋषि आदि जाते हैं ना। फिर यहाँ भी कितना नाम हो गया है। अपना एरोप्लैन भी है। बहुत शास्त्र पढ़ा हुआ है। हठयोग बैठ सिखलाते हैं। जैसे महऋषि आया। नाटक वाले एक्टर्स को पकड़ा था। उनको समझाया, छोड़ना नहीं होगा। मांस आदि भी भल खाओ। ऐसे बहुत हैं। बड़े-2 लखपति, करोड़पति जाते हैं, मांस-मदिरा आदि कोई भी बंद नहीं करते। सिर्फ कहते हैं अल्ला हूँ, अल्ला हूँ। ईश्वर सर्वव्यापी है। तुम बोलो, हरेक में 5 विकारों की प्रवेशता है। सर्वव्यापी ईश्वर नहीं है। सर्व में व्यापी 5 विकार हैं। पहले-पहले नम्बर में है काम विकार शत्रु है, जिसके लिए स्प्रीचुअल फादर कहते हैं–इन विकारों पर जीत पाने से तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। ऐसे-2 रिफाइन कर लिखना चाहिए। दो/चार बारी पढ़ें, रिफाइन कर तैयार करो, फिर उन्हों को भेज देंगे। वह चाहे तो अखबार में भी डाल सकते हैं। थोड़ा खर्चा भी हो, हर्जा नहीं है। अमेरिका के अखबार में डाल दो। जिससे समझ जायें कि हम भूले हैं। स्प्रीचुअल नॉलेज कोई भी मनुष्य नहीं दे सकता सिवाय एक बाप के। वही नई दुनिया स्थापन करेंगे। उन बिचारों को पता नहीं हैं पैराडाइज़ के मालिक यह ल॰ना॰ हैं। तुम ही जानते हो, औरों को भी समझा सकते हो। बाबा समझ जाते हैं तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। बाबा कहते हैं ड्रामा में अभी देरी है। अभी तुम्हारा नाम बाहर में हो तो बहुत आवाज़ फैल जाये। रिवोल्युशन हो जाये। बड़े आदमी आते हैं तो माइलों तब(तक) क्यू लग जाती है। निश्चय हो जाये यह साधारण तन में वही है, तो कितनी बड़ी क्यू आबू से यहाँ तब हो जाये। बच्चों पर बाप का लव है ना, तब तो परमधाम छोड़ पतित दुनिया में आते हैं। बाप कहते हैं जिस भावना से ईश्वर समझते हैं उस भावना में मैं हूँ ही नहीं। बाप करनकरावनहार है। ड्रामा अनुसार सभी कुछ होता है। खुद ही ड्रामा में बंधायमान है। स्प्रीचुअल रूहानी फादर ही स्प्रीचुअल नॉलेज बच्चों को देते हैं। रूहों को देते हैं। वही सृष्टि की(के) चक्र की नॉलेज, जिस नॉलेज को जानने से विश्व के मालिक बन जाते हो। यही है योग और नॉलेज। नॉलेज है सृष्टि चक्र की। योग है बाप के साथ। कितना सहज है। मैग्ज़ीन जो लिखते हैं वह नॉलेज में सबसे तीखे हैं। बाप ऐसे देते हैं लिख कर आना। सारा मदार है इस पर। स्वर्ग की स्थापना कैसे होती है, यह कोई भी नहीं जानते। तुम जानते हो तो तुम लिख कर बताओ जो वह समझ जाये। बड़ी बात तो नहीं है ना। इसको कहा जाता है विचार-सागर-मंथन करना ...। यह तुम जानते हो कितना बार बाबा ने आकर पढ़ाया है। फिर भी पढ़ाते रहेंगे। तुम तो वही हो ना। कहते हैं बाबा आप वही हो। बाप भी कहते हैं तुम वही हो। कल्प-कल्प तुमको पढ़ाता हूँ। पढ़ाई भी बड़ी सहज है। बाकी भक्तिमार्ग के शास्त्र आदि तो जन्म जन्मांतर पढ़ते आये हो। फिर क्या हुआ? तमोप्रधान ही बने हो। उतरते ही आये हो। भक्तिमार्ग पूरा तो होना ही है। सतयुग में कोई भी शास्त्र आदि नहीं होते। भक्तिमार्ग की कोई निशानी नहीं। बच्चों को कितना समझाते हैं। सभी समझाकर फिर भी कहते हैं–बच्चे, बाप को याद करो। अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। वह बाप ही टीचर है, सद्गुरु है। तुमको मरजीवा भी बनाते हैं। एडॉप्ट कर खुद ही पढ़ाते हैं, फिर खुद ही सद्गुरु बन सभी को ले जाते हैं। सतयुग में तो बहुत कोई थोड़े मनुष्य होते हैं। तुम अभी संगम पर हो तब समझते हो। यह है पुरानी दुनिया, वह है नई दुनिया। पुरानी को नया बाप ही बनाते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।